अध्याय सात

संचार

व्यापारिक मार्ग तथा राजमार्ग और वाहनों के प्रकार—नये तथा पुराने

व्यापारिक मार्ग तथा राजमार्ग

मुगलों के अधीन खैराबाद एक महत्वपूर्ण सरकार का मुख्यालय था तथा नवाबों के अधीन नाजिम का मुख्यालय रहा। इसकी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण अनेक कच्ची सड़कें इस स्थान से निकलकर सभी दिशाओं को जाती हैं। अवध गजेटियर (1877, खंड–तीन, पृष्ठ 369) के अनुसार उस समय जिले की मुख्य पक्की सड़कें सीतापुर से लखनऊ तथा सीतापुर से शाहजहाँपुर जाने वाली सड़कें थीं (अब दोनों राष्ट्रीय राजमार्ग हैं), पहली सड़क (सीतापुर से लखनऊ) साढ़े तैंतीस मील तक जिले से होकर जाती थी, जिसकी मंजिलें क्रमशः जलालपुर (ग्यारह मील), बहादुरपुर (सवा दस मील) तथा जयपारपुर (दस मील) थीं तथा दूसरी सड़क (सीतापुर से शाहजहाँपुर) तेइस मील जिले से होकर जाती थी, जिस पर विश्राम स्थल सीतापुर से साढ़े चौदह मील दूर महोली पर था, और ये सड़कें क्रमशः गोंड (जो इस जिले में जनसाधारण में गोन कहलाता है) तथा सरायन नदियों (जिन पर पुल बने हैं) को पार करती हैं। मुख्य कच्ची सड़कें ये थीं:—सीतापुर से लखीमपुर जाने वाली सड़क जिसकी जिले के भीतर एकमात्र मंजिल सेलूमऊ (सीतापुर से दस मील) पर थी, यह सड़क किसी नदी को पार नहीं करती थी, सीतापुर से हरदोई जाने वाली सड़क की जिले के भीतर दूरी इक्कीस मील है तथा इसकी मंजिलें रामकोट (सात मील) तथा दधनमऊ (चौदह मील) थीं तथा यह सड़क सरायन और पुरई (जो जिले में पिरई नाम से भी प्रसिद्ध है) नदियों को जिन पर पुल बने थे, पार करती थी; सीतापुर से महमूदाबाद और बहराम घाट होते हुए गोंडा जाने वाली सड़क की जिले के भीतर कुल लम्बाई सैंतीस मील थी, इसकी मंजिलें सरायन (आठ मील), बिसवां (तेरह मील) तथा महमूदाबाद (लगभग सत्रह मील) थीं, यह सड़क गोंड नदी को जिस पर पुल बना हुआ था, पार करती थी; सीतापुर से चहलारी घाट होते हुए बहराइच को जाने वाली सड़क लगभग इकतालिस मील जिले से होकर गुजरती थी, इसकी मंजिलें सरायन (आठ मील), बिसवां (लगभग तेरह मील), रसूलपुर (ग्यारह मील) तथा चहलारी (नौ मील) थीं और यह सड़क गोंड नदी (जिस पर पुल बना था) और चौका नदी (जिस पर घाट बना था) को पार करती थी; सीतापुर से लहरपुर होते हुए मल्लनपुर (बहराइच की ओर) को जाने वाली सड़क चौंतीस मील जिले से होकर जाती थी, इसकी मंजिलें कसरैली (सात मील), लहरपुर (दस मील), चांदी (ग्यारह मील), तम्बौर (छः मील) और मल्लनपुर (छः मील) थीं, तथा इस सड़क पर गोंड, केवानी, घाघरा, ऊल, कथना, चौका तथा गावरैया नदियां पड़ती थीं। गोंड को छोड़कर इनमें से किसी भी नदी पर पुल नहीं था तथा आवागमन नौघाटों और छिछले घाटों से होता था। सीतापुर से बरगदियाघाट होते हुए मेहदीघाट, जाने वाली सड़क, साढ़े तेइस मील इस जिले से होकर जाती थी, इसकी मंजिलें रामकोट (साढ़े सात मील), मिसरिख (आठ मील) तथा बरगदियाघाट (आठ मील) थीं तथा यह सड़क सरायन, पुरई तथा बेहटा नदियों, जिन सभी पर पुल थे, को पार करती थी। सीतापुर से नीमसार (नैमिषारण्य) होते हुए संडीला जाने वाली सड़क साढ़े इक्कीस मील जिले से होकर जाती थी, इसकी मंजिलें रामकोट (साढ़े सात मील), मिसरिख (आठ मील) तथा नैमिषारण्य (छः मील) थीं तथा यह सरायन, पुरई और बेहटा नदियों को पार करती थी जिन सभी पर पुल बने हुए थे। सीतापुर से मछरेहटा होते हुए नैमिषारण्य, जाने वाली सड़क पच्चीस मील तक जिले से होकर जाती थी, इसकी मंजिलें केवल मछरेहटा (चौदह मील) और नैमिषारण्य (ग्यारह मील) थीं तथा इस सड़क पर सरायन और बेहटा नदियां पड़ती थीं जिन दोनों पर पुल थे; सीतापुर से कस्ता और मितौली जाने वाली सड़क, पन्द्रह मील जिले से होकर जाती थी, जिसकी मंजिलें सादत नगर (चौदह मील) तथा भटपुरवा (डेढ़ मील) थीं यह केवल सरायन नदी को पार करती थी जिस पर पुल बना हुआ था। सीतापुर से हरदोई स्थित पिहानी तक जाने वाली सड़क, छब्बीस मील इस जिले से होकर जाती थी, इसकी मंजिलें महोली (साढ़े चौदह मील) तथा कुल्हाबरनगर (बारह मील) थीं तथा यह सरायन, पुरई और कठना नदियों को पार करती थी जिन पर पुल बने हुए थे। बाड़ी से महमूदाबाद तक जाने वाली सड़क केवल उन्नीस मील लम्बी थी, जिसकी मंजिलें भिडया (सात मील) और महमूदाबाद (बारह मील) थीं।

तब से जिले के यातायात के साधनों में बहुत सुधार हो चुका है। 1904 में सीतापुर-बिसवां सड़क को पक्का किया गया तथा 1909 में इसके बिसवां-जहाँगीराबाद भाग, जो पूर्वी निम्न भूमि (गाँजर) को रेलवे स्टेशन बिसवां से जोड़ता था, को पक्का किया गया। 1907–08 में हरगांव-लहरपुर सड़क को पक्का किया गया जिससे लहरपुर कस्बा हरगांव रेलवे स्टेशन से जुड़ गया। सीतापुर–लखीमपुर सड़क 1910 में तथा सीतापुर–हरदोई सड़क 1927 में पक्की की गयी थी। इन सड़कों के बन जाने से जिले के दक्षिणी–पश्चिमी तथा केन्द्रीय भागों से यातायात सुगम हो गया।

यातायात के दृष्टिकोण से जिले की पूर्वी निम्न भूमि सबसे खराब है, जिसके मुख्य निकास मार्ग बिसवां तथा लहरपुर हैं। इस क्षेत्र की लगभग सभी नदियां तथा नाले पुल रहित हैं तथा वर्षा ऋतु में कच्ची सड़कें बेकार हो जाती हैं। केवल लहरपुर–शाहपुर तथा लहरपुर–तम्बौर सड़कों पर घाघरा के आर-पार लट्ठों के पुल इसके अपवाद हैं। रेलों के चल जाने पर कमलापुर, खैराबाद तथा महमूदाबाद जंक्शन जैसी कई रेल पोषक (फीडर) सड़कें बनाई गयीं।